एक सच्चे गुरु को परिभाषित करने की पुरजोर कोशिश है " काशी मरणान्मुक्ति " "गुरु की महिमा वेद ना जाने" ऐसा वेदों में लिखा हुआ है। लेखक ने गुरु की महिमा गान का कोई भी अवसर नहीं छोड़ा, और गुरु की महत्ता को लेखनी में लाने का सुअवसर ढूंढ लिया। इस बेअंत का अंत पाने की शानदार कोशिश की।।

लेखक ने गुरु के प्रति अपार श्रद्धा व समर्पण को इस किताब के द्वारा प्रस्तुत करने की कोशिश की है।

काशी के विशाल व अद्भुत सौन्दर्य को माला में मोती की तरह पिरोया गया है।

सचमुच काशी शिव की नगरी है, शरीर काशी व शिव आत्मा इसका सुंदर चित्रण "काशी मरणान्मुक्ति" है।

पंचकोशी की यात्रा उससे जुड़ी कई पौराणिक कथाएँ, कहानी के नायक महा की भौतिक के साथ-साथ अध्यात्मिक यात्राओं का अद्भुत संगम पाठकों को बैठे बैठे ही ज्ञानवर्धन व दर्शनीयता का लाभ देती हैं

"पर याद रख मैं तेरा गुरु नहीं" यह पंक्ति शुरु से आखीर तक एक रोमांच बनाये रखती है और पटाक्षेप बहुत ही सुंदर शब्दों से किया गया।

यह किताब निश्चित ही वर्तमान व भविष्य की पीढ़ियों के लिए परमात्मा के साकार व निराकार रूप को समझने में सहयोग करेगी।

सचमुच यह लोगों के लिए पढ़ने, पढ़ाने व सहेज कर रखने जैसी धरोहर है।

धन्यवाद

नीलिमा गुंजन